को जानना है। श्रीमद्भागवत में उल्लेख है: **ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम्। सरहस्यं तदंगं च गृहाण गदितं मया . . . .** 'मायाच्छादित होने से आत्मा और परतत्त्व का ज्ञान परम गोपनीय (रहस्यमय) हैं, परन्तु जब स्वयं श्रीभगवान् इसका गान करते हैं तो यह ज्ञान-विज्ञान सुगमता से हृदयंगम किया जा सकता है।' भगवद्गीता से यह ज्ञान, विशेष रूप से आत्मज्ञान प्राप्त होता है। जीव स्वरूप से श्रीकृष्ण के भिन्न-अंश हैं। इसलिए उनका एकमात्र प्रयोजन भगवान् की सेवा करना है। इसी ज्ञान को कृष्णभावना कहा जाता है। मनुष्य को जीवन के आदिकाल से ही कृष्णभावना की शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए जिससे वह कृष्णभावना से पूर्णतया भावित होकर भगवत्सेवा रूपी कर्म कर सके।

वास्तव में काम जीव के नित्य स्वरूपसिद्ध भगवत्प्रेम की ही विकृत छाया है। इसलिए यदि शैशव में कृष्णभावनामृत की शिक्षा ग्रहण कर ली जाय तो जीव का स्वाभाविक कृष्णप्रेम काम के रूप में विकृत नहीं होगा। भगवत्प्रेम के काम में विकृत हो जाने पर स्वाभाविक स्थिति को पुनः प्राप्त करना बड़ा दुःसाध्य हो जाता है। तथापि, कृष्णभावना इतनी समर्थ है कि विलम्बित प्रयत्न करने वाला भी वैधी-भक्ति के द्वारा कृष्णप्रेमी बन सकता है। अतः जीवन की किसी भी अवस्था में इसकी अनिवार्यता को समझते ही कृष्णभावना (भगवद्भक्ति) के द्वारा इन्द्रियसंयम का अभ्यास प्रारम्भ कर देना चाहिए। इससे अन्धकारमय काम परम उज्ज्वल कृष्णप्रेम में परिणत हो जायगा, जो मानव जीवन का चरम लक्ष्य है।

इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः।।४२।।

21/3

इन्द्रियाणि=इन्द्रियों को; **पराणि**=श्रेष्ठ; **आहुः**=कहा जाता है; **इन्द्रियेभ्यः**=इन्द्रियों से अधिक; **परम्**=श्रेष्ठ; **मनः**=मन; **मनसः**=मन से; **तु**=भी; **परा**=उत्कृष्ट; **बुद्धिः**=मनीषा है; **यः**=जो; **बुद्धेः**=बुद्धि से भी; **परतः**=उत्तमः **तु**=किन्तु; **सः**=वह (आत्मा) है।

अनुवाद

कर्मेन्द्रियाँ जड प्रकृति से श्रेष्ठ हैं; मन इन्द्रियों से श्रेष्ठ है; बुद्धि मन से भी श्रेष्ठतर है और वह (आत्मा) बुद्धि से भी परे है।।४२।।

तात्पर्य

इन्द्रियाँ काममयी क्रियाओं की द्वार हैं। काम का निवास देह के भीतर है, इन इन्द्रियों के द्वारा उसे बाहर मार्ग दिया जाता है। इसलिए सम्पूर्ण देह की तुलना में इन्द्रियाँ श्रेष्ठ हैं। पर कृष्णभावना में इन मार्गों का उपयोग नहीं किया जाता। कृष्णभावना में जीवात्मा साक्षात् श्रीभगवान् का सान्निध्य प्राप्त करता है अतः यहाँ उल्लिखित शारीरिक कार्यों के अन्त परमात्मा हैं। किसी भी शारीरिक चेष्टा में इन्द्रियक्रिया होती है, इसलिए इन्द्रिय-प्रतिरोध का अर्थ है सम्पूर्ण शारीरिक क्रियाओं का